" साहित्य दर्पण"

DEPARTMENT OF HINDI

DEPARTMENTAL E-MAGAZINE

Volume -2 Session: 2025- 2026

Golaghat Commerce College (Autonomous)

साहित्य • संस्कृति • सृजन

"शब्दों में ज्ञान, विचारों में शक्ति और साहित्य में समाज का भविष्य निहित है।"

सामग्री सूची :

1. विभागीय अध्यक्षा का संदेश

2. संपादकीय संदेश

3. धैर्य

4. उम्मीद की किरण

5. शिव

6. पिता का प्यार

7. मानव जीवन में मन और दृष्टि का संबंध

8. रास उत्सव और उसका सामाजिक प्रभाव

9. समापन संदेश

Dr. Junti Duarah

Head of the Department.

विभागीय अध्यक्षा का संदेश :

प्रिय विद्यार्थियों एवं पाठकों, हमारे विभाग की छः‌माही ई-मैगज़ीन के प्रकाशन पर मुझे अत्यंत हर्ष एवं गर्व का अनुभव हो रहा है। यह पत्रिका विद्यार्थियों की सृजनात्मकता, ज्ञान, साहित्यिक अभिरुचि तथा नवाचारी विचारों को अभिव्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम है।

आज के आधुनिक एवं डिजिटल युग में ई-मैगज़ीन केवल सूचना एवं ज्ञान के आदान-प्रदान का मंच ही नहीं, बल्कि विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा निखारने तथा आत्मविश्वास विकसित करने का एक उत्कृष्ट अवसर भी प्रदान करती है।

इस पत्रिका के माध्यम से विद्यार्थियों के लेख, कविताएँ, विचार एवं विभिन्न रचनात्मक प्रस्तुतियाँ समाज तथा शिक्षा जगत में सकारात्मक संदेश पहुँचाएँगी। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह छ:माही प्रकाशन सभी पाठकों के लिए प्रेरणादायक, ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी सिद्ध होगा।

मैं इस ई-मैगज़ीन के प्रकाशन में योगदान देने वाले सभी विद्यार्थियों, संपादकीय समिति एवं शिक्षकों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देती हूँ। आशा है कि भविष्य में भी आप सभी इसी उत्साह, समर्पण एवं रचनात्मकता के साथ साहित्यिक और शैक्षणिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी निभाते रहेंगे।

आप सभी के उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामनाओं सहित।

विभागीय अध्यक्षा

डॉ. जोनटि दुवरा

MS. Maloti Bangthai,

Asstt. Professor

संपादकीय संदेश :

प्रिय पाठकों, हमारे विभाग की छ:माही ई-मैगज़ीन प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष एवं गर्व का अनुभव हो रहा है। यह पत्रिका विद्यार्थियों की प्रतिभा, रचनात्मकता, साहित्यिक अभिरुचि एवं नवाचारी सोच को अभिव्यक्त करने का एक महत्वपूर्ण मंच है।

ई-मैगज़ीन केवल लेखों और रचनाओं का संग्रह मात्र नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों के विचारों, अनुभवों एवं कल्पनाओं का जीवंत प्रतिबिंब भी है। इस माध्यम से विद्यार्थियों को अपनी लेखन क्षमता विकसित करने, नवीन विचार साझा करने तथा समाज एवं शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने का अवसर प्राप्त होता है।

इस अंक को सफल बनाने में योगदान देने वाले सभी विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं संपादकीय समिति के सदस्यों के प्रति मैं हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ। आप सभी के सहयोग, परिश्रम एवं उत्साह के बिना यह प्रयास संभव नहीं हो पाता।

मुझे विश्वास है कि यह छ:माही ई-मैगज़ीन पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक एवं रुचिकर सिद्ध होगी तथा विद्यार्थियों को भविष्य में और अधिक रचनात्मक कार्यों के लिए प्रेरित करेगी।

आप सभी के सहयोग एवं स्नेह के लिए हार्दिक धन्यवाद।

संपादक

सुश्री. मालोती

धैर्य :

एक गाँव में एक कुम्हार रहता था। वह रोज़ मिट्टी से सुंदर घड़े बनाता था। लेकिन उसका बेटा सोचता था कि यह काम बहुत आसान लगता है। एक दिन बेटे ने कहा,

"पिताजी, मैं भी घड़ा बनाऊँगा, यह तो बहुत आसान लगता है।"

कुम्हार मुस्कुराया और उसे कोशिश करने दी। बेटे ने जल्दबाज़ी में घड़ा बनाने की कोशिश की, लेकिन घड़ा बार-बार बिगड़ जाता था। वह गुस्से में बोला,

"यह मिट्टी ही खराब है!"

कुम्हार ने शांत होकर कहा,

“यह मिट्टी नहीं, तुममें धैर्य की कमी है, मेरे बेटे!”

फिर कुम्हार ने धीरे-धीरे, प्यार और धैर्य से घड़ा बनाया। कुछ ही देर में एक सुंदर घड़ा तैयार हो गया।

बेटे को अपनी गलती समझ आ गई। उसने सीखा कि हर काम में समय लगता है और धैर्य उसे और भी बेहतर बनाता है। अगर कोई काम पूरी मेहनत से, धीरे-धीरे और धैर्य के साथ किया जाए, तो वह पूर्णता प्राप्त करता है।

नाम: कस्तूरी दास

B.A. 2nd Semester

उम्मीद की किरण :

रात कितनी भी गहरी हो,

सवेरा होना तय है।

टूटे ख्वाबों के मलवे में,

जब नए सपने जगते हैं।

आंधियाँ आएँगी, जाने दो,

दीपक अपना जलाए रखो।

मंज़िल खुद तुम्हारे कदम चूमेगी,

बस हौसला बनाए रखो।

गिरकर संभलने वाले ही,

इतिहास रचते हैं।

जो डर के बैठ गए घर में,

वे बस पछताते हैं।

इसलिए चलो, रुको मत,

हर मोड़ पर एक सीख है।

जीवन बस यही कहता है कि,

कोशिश ही जीत की लकीर है।

नाम: भाग्यश्री माहिल गोगोई

B.A. 2nd Semester

शिव :

मेरे शिव अनन्त हैं, शिव ही सत्य हैं।

मैं इस अनन्त निधि का एक कण मात्र हूँ,

जो शिव की एक झलक के लिए लालायित रहता है।

मेरे प्राणों के कण-कण में शिव बसते हैं।

शिव की भक्ति के बिना मेरा मन रमता नहीं।

इस अथाह अनन्त निधि की

मुझ पर कृपा असीम है,

यह कभी समाप्त न हो।

मैं इस संसार के मोह-माया से मुक्त होना चाहती हूँ।

हे सती के स्वामी महाकाल!

जीवों के पालनहार,

अनन्त अवतारधारी मेरे प्रभु शंकर,

अपनी कृपा मुझ पर बनाए रखना।

जिन रूपों से तुमने असुरों का नाश किया,

जिन रूपों से देवताओं के

अहंकार को भंग किया,

उन्हीं रूपों से मेरा भी अहंकार नष्ट करना।

हे मेरे प्रभु, मेरे स्वामी शंकर!

मुझ पर कृपा बनाए रखना।

नाम: प्रियाक्षी गोगोई

M. A. 2nd Semester

पिता का प्यार :

कालू के पिता एक काठ मिस्त्री थे। वे अपने काम में बहुत व्यस्त रहते थे। कालू को हमेशा लगता था कि उसके पिता बहुत सख्त स्वभाव के हैं। वे हर छोटी बात पर उसे टोकते– “समय पर पढ़ाई करो”, “काम ठीक से करो”, “इधर-उधर मत भटको।” इसलिए कालू को अक्सर लगता था कि उसके पिता उसे समझते ही नहीं।

कालू और उसके पिता के बीच अधिक बातचीत नहीं होती थी। वह अपने पिता से थोड़ा डरता भी था। एक दिन उसने अपने पिता से स्कूल की फीस के लिए पैसे मांगे। पिता ने बिना कुछ कहे उसे पैसे दे दिए। उसी रात उसके पिता बहुत देर से घर लौटे और अत्यंत थके हुए दिखाई दे रहे थे।

अगली सुबह कालू ने अपनी माँ से पूछा–

“माँ, पापा कल रात इतनी देर से घर क्यों आए थे?”

माँ ने शांत स्वर में कहा– “तुम्हारे पापा दिन-रात मेहनत करते हैं ताकि तुम्हारी पढ़ाई में कोई कमी न रह जाए और तुम अच्छे से आगे बढ़ सको।”

यह सुनकर कालू की आँखों में आँसू आ गए। उस दिन उसे समझ में आया कि पिता की डाँट और सख्ती के पीछे कितना गहरा प्रेम छिपा होता है। उसे अपनी सोच पर पछतावा हुआ।

उसने मन ही मन सोचा–

“मेरे पिता केवल एक काठ मिस्त्री नहीं हैं, बल्कि वे मेरे सपनों के सच्चे कारीगर हैं।”

नाम: बन्दना कुमारी

B.A. 2nd Semester

मानव जीवन में मन और दृष्टि का संबंध :

मन कैसा होता है, इसे कोई प्रत्यक्ष रूप से देख नहीं सकता; यह केवल अनुभव के माध्यम से जाना जाता है। मन का आँखों की दृष्टि से गहरा संबंध होता है। दृष्टि ही मन के निर्माण का प्रमुख आधार है, और मन उसी के अनुसार कार्य करता है। वास्तव में, मनुष्य का मन उसकी सोच और कल्पनाओं का परिणाम है।

मनुष्य जैसा सोचता है, वैसा ही उसका कर्म होता है। जब वह अपने कर्म पर ध्यान केंद्रित करता है, तो मन उसी दिशा में विकसित होता है। मन इच्छाशक्ति का केंद्र है, जो व्यक्ति को अपने कर्मों के प्रति प्रेरित करता है। दृष्टि की शक्ति के माध्यम से मनुष्य अपनी इच्छाशक्ति से अच्छे और बुरे का विवेकपूर्ण निर्णय कर सकता है। इसलिए कहा जाता है– “सृष्टि दृष्टि में है।” यदि दृष्टिकोण सही न हो, तो सृष्टि का संतुलन भी बिगड़ सकता है और जीवन में भ्रम तथा अव्यवस्था उत्पन्न हो सकती है।

मन को किसी भौतिक वस्तु से स्पर्श नहीं किया जा सकता; इसे केवल दया, प्रेम, करुणा और क्षमा जैसी कोमल भावनाओं के माध्यम से ही छुआ जा सकता है। जब व्यक्ति किसी वस्तु या घटना को देखता है, तो उसका मन उससे प्रभावित होता है और उसी के अनुसार उसकी भावनाएँ एवं विचार निर्मित होते हैं।

वास्तव में, सब कुछ मनुष्य के मन में ही निहित है। मनुष्य जो भी करता है, उसका मूल कारण उसके मन में ही होता है। उसका भूतकाल, वर्तमान और भविष्य–सब कुछ मन में ही समाहित रहता है। इसलिए वर्तमान के कर्म ही हमारे भविष्य का निर्माण करते हैं। महान व्यक्ति अपने श्रेष्ठ मनोभावों–जैसे उदारता, मानवता और आत्मसंयम–के कारण पहचाने जाते हैं। यदि मनुष्य की दृष्टि सकारात्मक और शुद्ध होगी, तो उसका मन भी शुद्ध होगा। शुद्ध मन से अच्छी आदतें विकसित होती हैं, और अच्छी आदतों से उत्तम परिणाम प्राप्त होते हैं। अच्छे परिणाम ही अंततः अच्छे भाग्य का निर्माण करते हैं। अतः आवश्यक है कि हम अपनी

दृष्टि को सकारात्मक और व्यापक बनाएँ, क्योंकि सही दृष्टि ही श्रेष्ठ जीवन की आधारशिला है।

नाम: शिल्पा मनि लाहन

M. A. 2nd Semester

रास उत्सव और उसका सामाजिक प्रभाव :

असम की सांस्कृतिक परंपरा में रास उत्सव का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। यह उत्सव भगवान श्रीकृष्ण की दिव्य रासलीला पर आधारित है, जिसमें प्रेम, भक्ति और आध्यात्मिक आनंद का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। असम के वैष्णव धर्म और संस्कृति के प्रचार-प्रसार में महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव तथा माधवदेव का विशेष योगदान रहा है। उनके द्वारा रचित कीर्तनघोषा और अन्य वैष्णव ग्रंथों में रासलीला का अत्यंत सुंदर एवं भावपूर्ण वर्णन मिलता है।

रास उत्सव मुख्यतः शरद पूर्णिमा की चाँदनी रात में मनाया जाता है। मान्यता है कि इसी पावन रात्रि में भगवान श्रीकृष्ण ने वृंदावन में गोपियों के साथ रासलीला का आयोजन किया था। जब श्रीकृष्ण ने अपनी मधुर बाँसुरी बजाई, तब उसकी दिव्य ध्वनि सुनकर गोपियाँ सब कुछ छोड़कर उनके पास चली आईं। वे श्रीकृष्ण के प्रेम और भक्ति में इतनी लीन हो गईं कि संसार की समस्त मोह-माया को भूल बैठीं। यह रासलीला केवल लौकिक प्रेम का प्रतीक नहीं है, बल्कि आत्मा और परमात्मा के पवित्र मिलन का प्रतीक मानी जाती है।

रासलीला का आध्यात्मिक महत्व अत्यंत गहरा है। इसमें प्रेम और भक्ति को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। गोपियों का श्रीकृष्ण के प्रति निष्काम प्रेम और पूर्ण समर्पण मानव जीवन के लिए एक महान आदर्श प्रस्तुत करता है। रासलीला यह संदेश देती है कि मनुष्य यदि अहंकार, लोभ और स्वार्थ को त्यागकर ईश्वर की भक्ति करे, तो उसे आत्मिक शांति और सच्चे आनंद की प्राप्ति हो सकती है।

असम में रास उत्सव केवल धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का भी महत्वपूर्ण अंग है। इस उत्सव के अवसर पर गाँवों और नगरों में भव्य मेलों का आयोजन किया जाता है। लोग नए वस्त्र धारण कर उत्सव में भाग लेते हैं और पूरे वातावरण में भक्ति तथा उल्लास की भावना व्याप्त हो जाती है। रास मंचों पर कलाकार भगवान श्रीकृष्ण और गोपियों की लीलाओं का अभिनय करते हैं, जिसे देखने के लिए दूर-दूर से लोग एकत्रित होते हैं।

रास उत्सव का समाज पर गहरा प्रभाव पड़ता है। यह उत्सव लोगों में प्रेम, भाईचारे और एकता की भावना को मजबूत करता है। समाज के सभी वर्गों के लोग बिना किसी भेदभाव के इस आयोजन में सम्मिलित होते हैं। इससे सामाजिक समरसता और आपसी सद्भाव बढ़ता है। रासलीला के माध्यम से लोगों को नैतिकता, मानवता, सेवा और भक्ति का संदेश मिलता है।

यह उत्सव असम की लोककला और संस्कृति के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। रासलीला में संगीत, नृत्य, अभिनय, मुखौटा कला और पारंपरिक वेशभूषा का अत्यंत सुंदर प्रदर्शन होता है। विशेष रूप से माजुली का रास उत्सव अपनी भव्यता और सांस्कृतिक प्रस्तुति के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ दूर-दूर से पर्यटक और श्रद्धालु आते हैं। इससे स्थानीय कलाकारों को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलता है तथा लोककला को नई पहचान प्राप्त होती है।

रास उत्सव का आर्थिक महत्व भी कम नहीं है। उत्सव के दौरान मेले और बाजार सजते हैं, जहाँ हस्तशिल्प, खिलौने, मिठाइयाँ और अन्य वस्तुओं की बिक्री होती है। इससे स्थानीय व्यापारियों और कारीगरों को आर्थिक लाभ प्राप्त होता है।

वर्तमान आधुनिक और भौतिकवादी युग में भी रास उत्सव का महत्व बना हुआ है। यह उत्सव मनुष्य को प्रेम, त्याग, भक्ति और आत्मिक शांति का संदेश देता है। रासलीला हमें यह सिखाती है कि सच्चा सुख भौतिक वस्तुओं में नहीं, बल्कि प्रेम, भक्ति और आत्मिक संतोष में निहित है।

अतः कहा जा सकता है कि रास उत्सव केवल एक धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि असम की सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक एकता और आध्यात्मिक चेतना का प्रतीक है। यह उत्सव मानव जीवन को प्रेम, सद्भाव और भक्ति के मार्ग पर चलने की प्रेरणा प्रदान करता है।

अनिशा सैकिया

कक्षा – 12वीं

समापन संदेश :

"साहित्य समाज का दर्पण है और युवा रचनात्मकता उसका भविष्य।"

धन्यवाद।